ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

फुला देवी ने तय किया
संघर्ष से सफलता का सफर
(पृष्ठ – 02)

हालात से जूझते हुए आज
आत्मनिर्भरता की मिशाल
बन गई है पूजा
(पृष्ठ – 03)

सशक्तिकरण की ओर
बढ़ते कदम
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – जून 2024 ।। अंक – 35

सतत् जीविकोपार्जन योजना बनी विश्व की सबसे प्रभावी आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण की योजना

बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी योजना सतत् जीविकोपार्जन योजना अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल रही है। इस योजना की वजह से समाज के अत्यंत निर्धन परिवारों के जीवन में आए व्यापक बदलाव को सहज महसूस किया जा सकता है। इस योजना से लाखों परिवारों के जीवन–स्तर में सुधार आया है। यही कारण है कि इस योजना की सफलता की बानगी अब वैश्विक पटल पर भी बयां की जा रही है। परिणामस्वरूप योजना की सफलता और क्रियान्वयन की प्रक्रिया को देखने और समझने के लिए कई राष्ट्रों के मंत्रीगण एवं प्रतिनिधि मंडल बिहार आ रहे हैं। वे सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित परिवारों से मिलकर उनकी आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति से अवगत हो रहे हैं। पिछले 6 माह के दौरान 4 अलग–अलग राष्ट्रों (इंडोनेशिया, फिलीपींस, दक्षिण अफ्रीका और इथियोपिया) के मंत्रीगण एवं प्रतिनिधि मंडलों ने बिहार का भ्रमण करते हुए सतत् जीविकोपार्जन योजना के क्रियान्वयन की प्रक्रियाओं को समझा तथा इससे लाभान्वित परिवारों से मिलकर उनके जीवन में आए बदलावों को महसूस किया। साथ ही साथ इस योजना को अपने देश में भी क्रियान्वित करने के उद्देश्य से वे इसके महत्वपूर्ण अवयवों से परिचित हुए।

दरअसल राज्य में पूर्ण मद्य निषेध लागू किये जाने के पश्चात इससे प्रभावित परिवारों तथा समाज के अत्यंत निर्धन परिवारों को आजीविका के स्थाई साधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 26 अप्रैल 2018 को सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत की गई थी। इस योजना के क्रियान्वयन हेतु क्रमिक वृद्धि दृष्टिकोण की रणनीति अपनाई गई है। इस योजना के तहत योग्य परिवारों का चयन, उनका क्षमतावर्द्धन, सूक्ष्म नियोजन एवं जीविकोपार्जन संबंधी गतिविधियों से जुड़ाव, उत्पादक परिसंपत्तियों का हस्तांतरण, जीविकोपार्जन संसाधनों का विविधिकरण, वित्तीय संसाधनों तक पहुंच तथा सरकारी योजनाओं के साथ अभिसरण जैसे प्रमुख अवयवों को शामिल किया गया है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना हेतु लक्षित परिवारों के चयन की प्रक्रिया काफी पारदर्शी है। इस योजना के तहत सामुदायिक संसाधन सेवियों की टीम के द्वारा गाँव में अत्यंत निर्धन परिवारों की पहचान की जाती है। पूर्व में ताड़ी या शराब के निर्माण एवं व्यवसाय से जुड़े परिवारों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य समुदाय के अत्यंत निर्धन परिवारों की पहचान कर उनकी सूची तैयार की जाती है। तदुपरांत संबंधित ग्राम संगठन की बैठक में इसके अनुमोदन के पश्चात चिह्नित परिवारों को योजना में शामिल किया जाता है।

इस योजना के तहत लाभान्वित परिवारों का क्षमतावर्द्धन किया जाता है। इसके बाद संबंधित ग्राम संगठन के माध्यम से वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराते हुए उन्हें जीविकोपार्जन गतिविधि से जोड़ा जाता है। चयनित उद्यम के संचालन हेतु उन्हें तकनीकी मदद एवं निरंतर सहयोग प्रदान करने के साथ–साथ उनका नियमित अनुश्रवण किया जाता है। योजना अंतर्गत स्वरोजगार हेतु निर्धारित संवर्ग के तहत सूक्ष्म व्यवसाय या मवेशी पालन जैसी गतिविधि अपनाई जाती है। परिणामस्वरूप इस योजना से लाभन्वित परिवार अब आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण की ओर अग्रसर हो रहे हैं। पहले बेहद दयनीय स्थिति में जीवन–यापन करने वाले ये परिवार अब प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते हुए समाज की मुख्य धारा में शामिल हो रहे हैं। इनमें से अनेकों परिवारों ने अपनी वार्षिक आमदनी धीरे–धीरे बढ़ाकर अब लाख रुपये से अधिक कर ली है। इससे ये परिवार अब 'लखपति' बनकर समाज में मिसाल कायम कर रहे हैं। बहरहाल इन्होंने अपनी कामयाबी से सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा है और योजना की सफलता की कहानी अब देश–विदेश स्तर पर सुनाई दे रही है।

फुला देवी ने तय किया संघर्ष से सफलता का सफर

फुला देवी की कहानी आज असंख्य महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। इन्होंने जीवन की कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने परिवार को तरक्की की राह पर अग्रसर किया है। खगड़िया जिला के बेलदौर प्रखंड की रहने वाली फुला देवी ने सतत् जीविकोपार्जन योजना के सहयोग से अपना भाग्य बदला है और अपने परिवार को आत्मनिर्भर बनाया है।

फुला देवी का जीवन पहले बेहद कष्टप्रद था। उन्हें अपने तीन बेटे और एक बेटी के साथ–साथ अपने बीमार पति की देखभाल अकेले करनी पड़ती थी। पति की मानसिक बीमारी ने उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को बहुत खराब कर दिया था। इलाज में सारा पैसा खर्च हो जाने से उनके घर में खाने पर भी आफत हो गई थी। ऐसे में परिवार का पेट भरने के लिए वह दूसरे के घरों एवं खेतों में मजदूरी करने लगी थी। दरअसल फुला देवी की दयनीय स्थिति को देखते हुए ग्राम संगठन के द्वारा इन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया था। इसके बाद इन्हें क्षमतावर्धन एवं उद्यमिता विकास का प्रशिक्षण दिया गया।

तदुपरांत योजना के तहत उन्हें जीविकोपार्जन गतिविधि से जोड़ने के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई गई। इसके तहत ग्राम संगठन के माध्यम से उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये, जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत 20,000 रुपये और जीविकोपार्जन अंतराल राशि के तहत 7,000 रुपये प्राप्त हुए। इस राशि से फुला देवी ने सबसे पहले सिलाई मशीन खरीदकर स्वरोजगार की दिशा में अपना पहला कदम रखा। इसके अलावा उन्होंने अपने गाँव में एक किराना दुकान शुरू किया। जीविका के निरंतर सहयोग से वह किराना दुकान अच्छी तरह चलाना सीखी।

अब उनका दुकान अच्छे से चल रहा है जिससे उन्हें प्रतिमाह औसतन 8,000 रुपये की आय हो जाती है। साथ ही साथ सिलाई मशीन से भी उन्हें अच्छी आमदनी हो जाती है। इस राशि से वह अपने परिवार का अच्छी तरह भरण–पोषण कर पा रही है। वह बच्चों को पढ़ा भी रही है और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए बचत भी करती है।

डेजी के अंधकार भरे जीवन में उम्मीद की रोशनी

भागलपुर जिला के कहलगांव प्रखंड स्थित अंतिचक पंचायत की रहने वाली डेजी कुमारी का जीवन बेहद उतार–चढ़ाव भरा रहा है। एक दुर्घटना में डेजी कुमारी आग से जलकर बुरी तरह झुलस गई थी। इससे उनका जीवन पूरी तरह तबाह हो गया था। लेकिन डेजी को सबसे ज्यादा चोट इस बात से पहुँची थी कि जब वह संकटों से जूझ रही थी, तब इनके परिवार ने इनका साथ छोड़ दिया था। उनके पति डेजी को छोड़कर पंजाब चले गए थे। ऐसे बुरे वक्त में डेजी ने अकेले चुनौतियों का मुकाबला किया।

डेजी की दयानीय स्थिति को देखते हुए बंधन जीविका महिला ग्राम संगठन ने उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत चयनित किया। तदुपरांत योजना के तहत उनका क्षमतावर्द्धन किया गया। इन्हें ग्राम संगठन के माध्यम से योजना अन्तर्गत विशेष निवेश निधि के तहत 10 हजार रुपये, जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत 20,000 रुपये और जीविकोपार्जन अंतराल राशि के तहत 7,000 रुपये उपलब्ध कराए गए। इस राशि से डेजी ने अपने घर के पास किराना दुकान शुरू किया। वह किराना दुकान से प्रतिदिन 250 से 300 रुपये की आय अर्जित करने लगी है।

उनका पति उमेश भी अब पंजाब से लौटकर घर आ गये है। अपनी पत्नी को प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ता देखकर वह भी डेजी के साथ रहना चाहते थे। बुरे वक्त में साथ छोड़ देने के बावजूद डेजी ने उन्हें दुत्कारा नहीं, बल्कि अपने पति उमेश को पुनः अपना लिया है। अब वह अपने पति के साथ मिलकर दुकान चलाने लगी है। दुकान से होने वाली आय से इन्होंने छोले–भटोरे की एक अलग दुकान शुरू की है। डेजी देवी किराना दुकान एवं छोले–भटोरे की दुकान चलाकर अच्छी आय अर्जित कर रही है। इस प्रकार किराना दुकान एवं छोले–भटोरे की दुकान से डेजी को प्रतिमाह 10 से 12 हजार रुपये की आमदनी हो रही है। इससे इनका परिवार खुशी पूर्वक जीवन जी रहा है।

हालात से जूझते हुए आज आत्मनिर्भरता की मिशाल बन गई है पूजा

मुजफ्फरपुर जिला के मड़वन प्रखंड में मधुबन गाँव की रहने वाली पूजा अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जी रही थी। उनके पति हरिद्वार स्थित एक स्टील प्लांट में क्रेन चलाने का काम करते थे। इसी बीच वर्ष 2019 में उनके पति को कैंसर हो गया। इससे उनके इलाज में लाखों रुपये खर्च करने पड़े। इसके बावजूद पूजा अपने पति को नहीं बचा सकी और उनका निधन हो गया। पति के अचानक गुजर जाने से पूजा का सब कुछ खो गया था। अब परिवार की जिम्मेदारी अकेले पूजा के कंधों पर आ गई थी।

अक्टूबर 2020 में पूजा को सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया था। योजना के तहत मिली आर्थिक सहायता से इन्होंने सब्जी की दुकान शुरू की। इसके अलावा वह आस–पास के गाँवों में घूमकर सब्जियाँ बेचने लगीं। हालांकि सब्जियों की बिक्री से उन्हें बहुत ज्यादा लाभ नहीं हो पा रहा था। इसके बाद वह पट्टे पर जमीन लेकर खेती भी करने लगी। साथ ही पूजा ने एक भैंस भी खरीद ली। हालांकि पूजा की जिंदगी में असल बदलाव वर्ष 2022 में बैग क्लस्टर के शुरू होने के बाद आया। पूजा ने बार टैग मशीन से रोजगार करना शुरू किया। बायोटेक मशीन मिलने से पूजा की मासिक आय 20 से 25 हजार रुपये तक पहुँच गई है। मशीन का किस्त जमा करने के बाद भी उन्हें प्रतिमाह 15000 रुपये की आय हो जाती है। पूजा अब 6 कट्ठा जमीन पट्टे पर लेकर खेती, बकरी पालन, भैंस पालन और बैग क्लस्टर में कार्य कर अच्छी आमदनी अर्जित कर लेती है।

पूजा कहती है कि पति के गुजर जाने के बाद वह सब कुछ खो चुकी थी। लेकिन जीविका के सहयोग और अपनी मेहनत से आज वह आत्मनिर्भर बन गयी है। वह अपने बच्चों को अच्छी परवरिश दे रही है और बेटी की शादी भी कर चुकी है। सतत् जीविकोपार्जन योजना से उन्हें बहुत लाभ हुआ। आज वह अपने समाज के लिए मिसाल बन गई है।

संघर्ष से सफलता की ओर बढ़े कदम

दीपू देवी पश्चिम चंपारण जिला अंतर्गत बैरिया प्रखंड स्थित पखनाहा पंचायत की रहने वाली है। दीपू का परिवार मुश्किल दौर से गुजर रहा था। उनके पति खूब शराब पीते थे और परिवार की जिम्मेदारियाँ नहीं उठाते थे। दीदी ने मजदूरी करके परिवार चलाने की कोशिश की। फिर भी परिवार के भरण–पोषण में कठिनाई हो रही थी। मोहल्ले में शराब बनाने और बेचने का काम पहले से चल रहा था। ऐसे में दीपू दीदी भी मजबूरी में इसमें शामिल हो गई। इसी बीच बिहार में पूर्ण शराबबंदी लागू होने से उनका यह काम बंद हो गया। इससे परिवार की रोजी–रोटी खत्म हो गई। अब उन्हें किसी नए काम की तलाश थी, ताकि परिवार का गुजर–बसर हो सके।

वर्ष 2020 में बैरिया प्रखंड में सतत् जीविकोपार्जन योजना शुरू की गई थी। ऐसे में दीपू देवी को भी ऋषि मुनि जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा इस योजना हेतु चयनित किया गया। उन्हें वैकल्पिक रोजगार हेतु मानसिक रूप से तैयार किया गया और प्रशिक्षित भी किया गया। दीपू ने योजना की मदद से किराना दुकान शुरू किया। शुरुआत में दुकान सही ढंग से नहीं चल पा रही थी और कम बिक्री होती थी, इससे वह चिंतित रहती थी।

दुकान का भ्रमण करने के दौरान सतत् जीविकोपार्जन योजना अंर्तगत कार्यरत मास्टर संसाधन सेवी और प्रखंड संसाधन सेवी ने दीदी के पति से मुलाकात की। उनके पति पहले बैंड पार्टी में काम करते थे। ऐसे में उन्होंने अपनी बैंड पार्टी बनाने की इच्छा जाहिर की। जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत प्राप्त राशि से इन्होंने बैंड पार्टी की शुरुआत की। आज इस बैंड पार्टी में 10 लोग काम कर रहे हैं। शादी–विवाह के दिनों में उनकी बैंड पार्टी की लगभग रोज बुकिंग रहती है। इसके अलावा आम दिनों में कुछ खास मौकों पर भी बुकिंग होती है। दीपू देवी और उनके पति मिलकर इस बैंड पार्टी का संचालन कर रहे हैं। इससे उन्हें अच्छी आमदनी हो जाती है। इसके अलावा इससे जुड़े 10 लोगों को भी रोजगार मिल रहा है। बैंड पार्टी की बुकिंग से इन्हें प्रति माह औसतन 18 हजार रुपये की आमदनी हो रही है। अब वह बैंड पार्टी के परिवहन खर्चों को बचाने के लिए गाड़ी खरीदने हेतु रूपये को जमा कर रही है।

सशक्तिकरण की ओर बढ़ते कदम

पार्वती देवी सीतामढ़ी जिला अन्तर्गत सूपी प्रखंड के मनीआरी ग्राम पंचायत की रहने वाली है। पहले दयनीय स्थिति में गुजर–बसर करने वाली पार्वती देवी ने जीविका की मदद से अपने जीवन को नया आयाम दिया है।

पार्वती देवी की शादी कम उम्र में हो गई थी। उनके पति लंबे समय से अस्थमा से पीड़ित थे। ऐसे में लंबी बीमारी के बाद वर्ष 2012 में उनका निधन हो गया था। पति के गुजर जाने के बाद पार्वती देवी के ऊपर अपने 6 बच्चों के पालन–पोषण की जिम्मेदारी आ गई थी। पति की मृत्यु के पश्चात पार्वती देवी ने खुद को काफी असहाय महसूस किया। उनके लिए परिवार का भरण–पोषण करना अत्यंत कठिन हो गया था। आर्थिक तंगी के कारण वह दो वक्त का खाना जुटाने में भी असमर्थ थीं। इसके अलावा बच्चों की शिक्षा का खर्च उठाना भी संभव नहीं था। अपने बच्चों की परवरिश के लिए वह घर से बाहर निकलकर गाँव में मजदूरी करने लगी। हालांकि केवल मजदूरी से मिलने वाली आय से उनके लिए अपने परिवार का भरण–पोषण करना संभव नहीं हो पा रहा था।

इसी बीच 9 सितंबर 2018 को उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत चयनित किया गया। योजना के तहत चयन के उपरांत पार्वती देवी ने एक जनरल स्टोर खोलने की इच्छा जताई। जिसके लिए उन्हें 23 फरवरी 2019 को जीविका से सूक्ष्म व्यवसाय के संचालन का प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें विश्वास निर्माण एवं उद्यमिता विकास का प्रशिक्षण दिया गया। इससे उनमें उद्यम करने का साहस आया एवं उनका आत्मविश्वास बढ़ा। इस प्रशिक्षण के बाद उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत व्यवसाय शुरू करने के लिए जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत कुल 47,000 रुपये, विशेष निवेश निधि के तहत 10,000 रुपये एवं जीविकोपार्जन अंतराल राशि के तहत 7 माह तक प्रति माह एक हजार रूपये प्राप्त हुए। इस राशि से इन्होंने जनरल स्टोर शुरू किया। पार्वती देवी माँ दुर्गा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई। वह समूह की नियमित साप्ताहिक बैठक में हिस्सा लेने लगी। इससे उनमें काफी जागरूकता आयी। अपनी जरूरतों के वक्त वह समूह से रुपये का लेन–देन भी करने लगी।

अब वह जीविका के तहत कार्यरत मास्टर रिसोर्स पर्सन की मदद से इस व्यवसाय का अच्छी तरह संचालन करने लगी है। वह दुकान चलाना सीख गई है। जनरल स्टोर शुरू करने के बाद पार्वती देवी के व्यवसाय में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। इसे निम्नलिखित तालिका में समझा जा सकता है:–

क्रम संख्या	वर्ष	कुल संपत्ति मूल्य (रु.)	कुल औसत टर्नओवर (रु.)	कुल औसत आय (रु.)
1	2019	37537	66286	39312
2	2020	40389	69348	44352
3	2021	56376	116928	44688
4	2022	58893	118488	46752
5	2023	131287	322992	59928
6	2024 (मई तक)	139652	531936	102660

वर्तमान में पार्वती देवी जनरल स्टोर के साथ–साथ कोल्ड ड्रिंक और चाय भी बेचती है। अब वह इस जनरल स्टोर से लगभग 9 हजार रुपये प्रति माह की आय अर्जित कर लेती है। इस आमदनी से वह न केवल अपने सभी पारिवारिक खर्चों को अच्छी तरह से पूरा कर पा रही है बल्कि अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा भी प्रदान कर रही है। इसके अलावा वह प्रतिमाह कुछ पैसे बचत कर बैंक में जमा भी करती है।

संघर्ष और सशक्तिकरण की इस यात्रा की वजह से आज वह अपने समाज में सभी महिलाओं के लिए एक मिशाल बनी है। उनके समर्पण और मेहनत ने साबित कर दिया है कि कठिनाइयों का सामना करके सफलता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने न केवल अपने परिवार का जीवन स्तर सुधारने में सफलता पाई है बल्कि अपने समुदाय की कई महिलाओं को भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार